वर्साय की संधि (1919) और अंतरयुद्ध काल में यूरोप की अस्थिरता
The Treaty of Versailles (1919) and Instability in Interwar Europe

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात 1919 में हुई वर्साय की संधि ने यूरोप की राजनीतिक संरचना को पुनर्गठित किया, किंतु साथ ही यह भविष्य की अस्थिरता का आधार भी बनी। इस संधि के माध्यम से जर्मनी पर कठोर आर्थिक, सैन्य और क्षेत्रीय प्रतिबंध लगाए गए, जिनका उद्देश्य यूरोप में स्थायी शांति स्थापित करना था। परंतु वास्तविकता में यह संधि "दंडात्मक शांति" (Punitive Peace) का उदाहरण सिद्ध हुई।

जर्मनी पर युद्ध क्षतिपूर्ति (Reparations), सैन्य सीमाएँ तथा राइनलैंड का विसैन्यीकरण थोपे गए। इसके अतिरिक्त, जर्मन क्षेत्रों को पोलैंड, फ्रांस और अन्य देशों में विभाजित कर दिया गया। इससे जर्मनी में राष्ट्रीय अपमान, आर्थिक संकट और राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हुई। वाइमर गणराज्य को प्रारंभ से ही वैधता संकट और आर्थिक मुद्रास्फीति का सामना करना पड़ा।

इतिहासकार जॉन मेनार्ड कीन्स ने अपनी पुस्तक "The Economic Consequences of the Peace" में तर्क दिया कि वर्साय की संधि आर्थिक रूप से अव्यावहारिक थी और इससे यूरोप की आर्थिक संरचना कमजोर हुई। मार्क्सवादी इतिहासकारों ने इसे पूँजीवादी शक्तियों द्वारा जर्मनी को नियंत्रित करने का प्रयास माना, जबकि संशोधनवादी इतिहासकारों के अनुसार संधि की कठोरता ने नाजीवाद के उदय के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित कीं।

अंतरयुद्ध काल (1919–1939) में यूरोप आर्थिक मंदी, राष्ट्रवाद और राजनीतिक उग्रवाद से ग्रस्त रहा। 1929 की महामंदी ने लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को कमजोर किया और अधिनायकवादी शासन—विशेषकर जर्मनी और इटली—के उदय को बढ़ावा दिया। इस प्रकार वर्साय की संधि केवल युद्ध की समाप्ति का दस्तावेज नहीं थी, बल्कि द्वितीय विश्व युद्ध के दीर्घकालिक कारणों में से एक प्रमुख तत्व थी।

निष्कर्षतः वर्साय की संधि ने यूरोप में शांति स्थापित करने के बजाय शक्ति संतुलन को अस्थिर कर दिया और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में प्रतिशोध, असंतोष तथा उग्र राष्ट्रवाद को जन्म दिया।